शोधायतन

वाणिज्य, कला, शिक्षा, समाजशास्त्र तथा ह्यूमेनिटीज पर
आईसेक्ट विश्वविद्यालय की शोध पत्रिका

Shodhaytan

AISECT University Journal of Commerce, Arts,
Education, Sociology and Humanities

Vol.-III / Issue-VI

December-2016

शोध के चक्र ज्ञान का मार्ग रचें, लेकिन पहुंचाए
सामाजिक सशक्तिकरण तक

विमुद्रीकरण
Skill India
जनधन योजना
Quality Education
मेक इन इंडिया Stand
Digitalization
Entrepreneurship
Skill India

Published By

AISECT UNIVERSITY

Where aspirations become achievements.

Village-Mendua, Post-Bhojpur, Distt. Raisen (M.P.) India Pin-464993
City Office: 3rd Floor, Sarnath Complex, Opposite Board Office, Shivaji Nagar Bhopal-462016
www.aisectuniversity.ac.in

RABINDRANATH TAGORE UNIVERSITY

UGC Approved Journals

Shodhaytan (AUJ-STN)

- Multidisciplinary Academic Research

Indexing and Impact Factor :

INDEX COPERNICUS : 48609 (2018)

Read / Download More Articles

वर्तमान में युवा उद्यमी और उनकी कार्यप्रणाली : एक विश्लेषण

अश्विनी कुमार शर्मा
शोधार्थी, आईसेक्ट विश्वविद्यालय, रायसेन (म.प्र.) भारत

सारांश
सफल युवा उद्यमी अपने लिए एक निश्चित लक्ष्य निर्धारित करता है जिसकी प्राप्ति के लिए वह सदैव प्रयासरत रहता है। यह लक्ष्य उसके लिए सर्वोपरि होता है और इसलिए वह इससे अन्य कार्यों की तुलना में प्राथमिकता देता है। उद्यमशील युवा यह भी कोशिश करता है कि यह लक्ष्य एक समयबद्ध कार्यक्रम में उसे प्राप्त हो सके। उसका लक्ष्य समयबद्ध रूप से पूर्ण हो सके इसलिए वे अपनी सम्पूर्ण योजना को छोटे–छोटे कार्यों में विश्लेषित एवं विभाजित करते हैं। योजना को क्रियान्वित करने में जो बाधाएं उत्पन्न हो सकती हैं उनका पूर्वानुमान कर लेते हैं, उसके लिए वैकल्पिक उपायों का आंकलन कर लेते हैं और अपनी योजना को तर्कसंगत रूप में लागू करने के लिए उचित ढंग अपनाकर युवा उद्यमी अपनी योजनाओं को क्रियान्वित करते हैं।

सफल युवा उद्यमी सदैव तत्पर रहता है कि उसे कब और कौन से अनुकूल अवसर मिल सकें जिनका उपयोग वह अपने कार्यों को पूर्ण करने में कर सकें। ऐसे अवसर उसके व्यवसाय, उद्योग, तकनीकी या व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर कभी भी ध्यान में आ सकते हैं। उद्यमशील युवा इस तरह से प्रयासरत रहते हैं कि वित्तीय, मशीन, कच्चा माल आदि क्रय करने या अन्य सहायता के लिए कहाँ से संभावित अवसरों का उपयोग कर सकें जिससे उन्हें अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सहयोग मिल सके। ऐसे व्यक्ति नीतिगत परिवर्तनों या उत्पादनों के परिवर्तन और नवीनीकरण के अवसरों की तलाश में रहते हैं और जैसे ही उन्हें उचित मौका मिलता है वे उसे क्रियान्वित करके लाभ उठाने का प्रयास करते हैं।

सफल युवा उद्यमी अपनी तरफ से किसी भी रूकावट को दूर करने के लिए हर तरह के प्रयास करते हैं जिससे उनके लक्ष्य की प्राप्ति हो सके।"[1] इस तरह के युवा बाधाओं या अड़चनों के आने पर अपने लक्ष्य से विचलित नहीं होते बल्कि बार–बार प्रयास करके उन बाधाओं को दूर करने का प्रयास करते हैं और अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए तत्पर रहते हैं।

युवा उद्यमी अपनी तरफ से सदैव इस बात का प्रयास करते हैं कि कहां से, कैसे और किस प्रकार की सूचनाएं प्राप्त करते रहे जिससे उनका उपयोग लक्ष्य की प्राप्ति में कर सकें। **इस तरह की सूचनाओं के लिए वे व्यक्तिगत खोजबीन या शोध कार्यों के माध्यम से यह पता करते रहते हैं कि किस तरह से उनका उपयोग उत्पाद या सेवाओं को प्रदान करने में किया जाए।"** साथ ही युवा उद्यमी विशेषज्ञों की राय भी प्राप्त करते रहते हैं, जिससे व्यवसाय और तकनीकी सलाह मिल सके। वे अलग–अलग वस्तुओं के बारे में सूचनाओं का एक अच्छा तंत्र बनाने हेतु प्रयासरत रहते हैं जिससे इन सूचनाओं का उपयोग आवश्यकतानुसार कर सकें, और दूसरों व्यक्तियों के परिचय का लाभ उठा सकें।

युवा उद्यमी जो भी कार्य हाथ में लेते हैं उसे पूरा करने को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हैं। इस संदर्भ में उनकी प्राथमिकता या लगाव इस बात से पता चलता है कि उसे पूरा करने के लिए वे अपनी व्यक्तिगत सुविधाओं की परवाह न करते हुए उसे पूरा करने के लिए अपनी तरफ से असाधारण प्रयास करते हैं। इस तरह के उद्यमी, कार्य पूरा होने में आने वाली समस्याओं के लिए ज्यादातर व्यक्तिगत जिम्मेंदारी लेते हैं और कोशिश करते हैं कि जिस कार्य को उन्होंने किसी समय विशेष में पूरा करने का वचन दिया है उसकी गुणवत्ता को देखते हुए समयबद्ध तरीके से पूरा कर सकें।

उद्यमी युवा सदैव उच्च व उत्कृष्ट श्रेणी के कार्यों को करने में विश्वास रखते हैं जिससे वे किसी भी वर्तमान गुणवत्ता के मापदंड को पा सकें।"[3] ये युवा हर समय उच्च गुणवत्ता की श्रेणी के वस्तुओं के उत्पादन या सेवाओं को प्रदान करने की चाह रखते हैं और इसलिए अपने कार्यों की या अपने उत्पादों की दूसरों से तुलना करते रहते हैं जिससे वे उनमें सुधार ला सकें। उनका ध्येय दीर्घकालीन व्यवसाय या कार्यों को करना होता है, इसलिए वे गुणवत्ता का ज्यादा ध्यान रखकर कार्य करते हैं।

उद्यमी सदैव अपनी कार्य क्षमता किस तरह से बढ़ा सके। क्षमता बढ़ाने का प्रयास या तो तेज कार्य करने या कम संसाधनों का उपयोग करके और कम कीमत पर उत्पादन करके अथवा कार्य करने में दिखाई देता है।"[4] सफल युवा उद्यमी बनने की चाह रखने वाला युवा सदैव इस बात के लिए प्रयासरत रहता है कि किस तरह से वह अपने सेवाओं या उत्पादन की लागत में कमी ला सके या अच्छी और आधुनिक तकनीकी को अपनाकर वह अपने कार्यों को शीघ्र पूरा करके अपनी क्षमता को आगे बढ़ा सके। इस तरह से युवा सदैव लागत और लाभ या सुविधा के तुलनात्मक अध्ययन की चाह रखते हैं जिससे अपने उत्पादन या तकनीकी विधि से परिवर्तन ला सकें और अपनी क्षमता बढ़ा सकें।

युवा उद्यमी दूसरों को अपने उत्पादन या सेवाएं खरीदने के लिए किस तरह आकर्षित कर सके और उसे अपने पक्ष में राजी कर सके या उसे सुविधाएं प्रदान करने के लिए अपनी बात स्वीकार करवा सके। ऐसा व्यक्ति यदि दूसरों से कुछ करवाना चाहता है या उसे अपने पक्ष में लाना चाहता है तो उसके लिए उन व्यक्तियों से पूरी तरह अनुसरण करके अपने कार्यों को पूरा करवाने का प्रयास करता है।

सफल युवा उद्यमी सोचता है कि किस नीति का उपयोग कर दूसरे पक्ष को प्रभावित कर सके और उसके जरिए वह अपने परिचय को बढ़ाकर अपने व्यावसायिक उद्देश्यों की पूर्ति कर सके।"[5] ज्यादातर युवा उद्यमी अपने उत्पाद के गुणों, उपयोगिता एवं तकनीकी जानकारियों के जरिए दूसरों को प्रभावित करने का प्रयास करते हैं लेकिन कभी–कभी यदि वह किसी और प्रभावी युवा को जानता है तो उससे भी अपने कार्यों को पूरा करने का प्रयास करता है। जिससे उसका कार्य पूरा हो सके और वह उपने उद्देश्यों को प्राप्त कर सके।

सफल युवा उद्यमी समस्याओं से जूझने और विचारों को एक निश्चित रूप देने के लिए संबंधित अधिकारियों से सीधे बात करने का प्रयास करता है तथा यह बताने का प्रयास करता है कि उन्हें क्या करना चाहिए या क्या करना है? सफल युवा 'उद्यमी' अपने अन्तर्गत काम करने वालों को एक निश्चित अनुशासन में रहने और कार्य न करने पर दंडित करने का कार्य करता है। आवश्यकता पड़ने पर वह यह भी बताने का प्रयास करता है कि वह अपने अधिकार के प्रयोग के लिए उन पर वर्चस्व स्थापित कर सकता है या उस अधिकार के जरिए दूसरों से कार्य पूरा करवा सकता है।

उद्यमी युवा कार्यों का मूल्यांकन करने एवं उनका अनुसरण करके तथा उनसे संबंधित जानकारी रखने में विश्वास रखता है जिससे उन्हें कार्यों की गुणवत्ता आदि के बारे में लगातार पता कर सके।"[6] वह व्यक्तिगत तौर पर कार्यों का निरीक्षण करता है जिससे कार्यों में किसी तरह की गुणवत्ता की कमी या बाधा न आ सके और सेवाएं या उत्पाद उच्च स्तर के और कम लागत पर प्रदाय किए जा सकें।

उद्यम में सफल युवा अपने कर्मचारियों के हितों में किस तरह का सुधार लाया जा सके जिससे उन्हें कार्य करने के लिए निरंतर प्रोत्साहन मिलता रहे, आदि के बारे में विशेष ध्यान रखता है। इनकी चाह रहती है कि कर्मचारियों की व्यक्तिगत समस्याओं पर किसी तरह ध्यान दिया जा सके जिससे कार्यों पर इनका असर न हो और संस्थागत उद्देश्यों की प्राप्ति हो सके।

इस प्रकार यदि किसी भी व्यक्ति में उपरोक्त वर्णित गुणों में से ज्यादा गुण मौजूद होंगे तो उसकी सफलता की संभावनाएं ज्यादा होंगी। उद्यमशील व्यक्ति सदैव इस प्रयास में रहते हैं कि वे स्वयं को विश्लेषित करके यह अनुमान लगाते रहे कि उनके अन्दर कौन–कौन से मजबूत तथ्य मौजूद हैं और किन गुणों को अपना कर या बढ़ाकर ज्यादा दृढ़–संकल्प एवं आत्मविश्वास वाला व्यक्ति बना जा सकता है।

यह भी प्रयास करते हैं कि यदि उनमें कोई गुण मौजूद नहीं है या वे किसी क्षेत्र में कमजोर हैं तो कैसे उन गुणों को अपने अन्दर प्रशिक्षण, पठन–पाठन आदि के द्वारा बढ़ाया जा सके जिससे उनकी सफलता की संभावनाएं बढ़ सके। नव उद्यमी अपनी सफलता का प्रतिशत अपने अंदर के गुणों को ध्यान में रखकर ही प्राप्त कर सकते हैं।

सन्दर्भ सूची

[1] एम.एल. झिंगन, आर्थिक विकास में उद्यम वृत्ति, कोणार्क पब्लिशर्स प्रा.लि., 1962, पृ.88।

[2] सिंह, आर.एन. एवं श्रीवास्तव जे.पी. व्यष्टि अर्थशास्त्र, रमश बुक डिपो जयपुर, 1970, पेज 243,

[3] उद्यमी एक सामान्य अध्ययन, व्यवसायिक उद्यमिता का विकास, जी.एस. सुधा, रमेश बुक डिपो जयपुर, 1995 पृ.73।

[4] उद्योग का संतुलन क्षेत्रीय विकास– औद्योगिक अर्थशास्त्र डॉ. आर.एस. कुलश्रेष्ठ, साहित्य भवन आगरा, 1992 पृ.61

[5] जोशी डी.एम. एण्ड एसोसियेट्स केन्द्र एवं उद्यमिता विकास केन्द्र भोपाल।

[6] उद्यमिता की अवधारणा जी.एस. सुधा, व्यवसायिक उद्यमिता का विकास, पृ.21।